श्रद्धान्जलि

का. हरभजन सिंह सोही को लाल सलाम

15 जून, **2009** को भारत की कम्युनिस्ट पार्टी पुनर्गठन केन्द्र (मा.ले.) (सी.पी.आर.सी.आई.) के नेता का. हरभजन सिंह सोही की मृत्यु हो गयी। का. सोही का राजनीतिक जीवन चार दशक से भी ज्यादा समय तक रहा। इतने लम्बे राजनीतिक जीवन में वे कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन के विभिन्न उतार–चढ़ाव से गुजरे, लेकिन वे हमेशा मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओ विचारधारा पर दृढ़तापूर्वक निष्ठावान ही नहीं रहे बल्कि भारतीय कम्युनिस्ट क्रांतिकारी ग्रुपों के अंदर आये विचलनों व भटकावों के विरुद्व आजीवन संघर्ष करते रहे।

भारत के कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन में उन्हें इस बात के लिए खासतौर से याद किया जायेगा कि जब नक्सलबाड़ी के उभार के बाद कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन में वामपंथी आतंकवादी कार्यदिशा की आंधी आयी हुई थी, उस समय वे दृढ़तापूर्वक उसके विरुद्व संघर्ष करने वालों में चंद लोगों में एक थे। उन्होंने क्रांतिकारी जन–दिशा को लागू करने व उसे स्थापित करने में अपने संगठन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

महान मार्क्सवादी–लेनिनवादी चिंतक और विश्व कम्युनिस्ट आंदोलन के नेता माओ–जे–दोंग की मृत्यु के पश्चात चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के संशोधनवादी हो जाने तथा अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के लिए उसकी वर्ग–सहयोगी कार्यदिशा 'तीन दुनिया के विभेदीकरण' के सिद्वान्त को उन्होंने न सिपर्फ तत्काल ही चिन्हित किया बल्कि उसके विरुद्व निर्ममतापूर्वक संघर्ष किया। विचारधारा के क्षेत्रा में उन्होंने समझौता विहीन संघर्ष करने में जो दृढ़ता दिखायी वह कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन के लिए हमेशा प्रेरणास्रोत रहेगी।

हमारा संगठन इस बात के लिए उनका शुक्रगुजार रहेगा कि उन्होंने हमें माओ की मृत्यु के बाद समय रहते चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की संशोधनवादी कार्यदिशा से परिचित कराया और उनके 'तीन दुनिया के विभेदीकरण' के वर्ग सहयोगी सिद्वान्त की गलत कार्य दिशा को ठीक करने में हमारी मदद की। इस तरह विचारधारा के क्षेत्रा में संशोधनवादी दलदल में जाने से रोकने में उन्होंने हमारे संगठन की मदद की।

आज जब विश्व पूंजीवादी व्यवस्था गम्भीर आर्थिक संकट से गुजर रही है, विशाल मजदूर–मेहनतकशों के आंदोलनों के उभरने के आसार दिखाई दे रहे हैं, विश्व एक नये उथल–पुथल के दौर में प्रवेश कर रहा है, ऐसे समय में कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन के एक नेता का चले जाना कापफी हद तक एक न पूरा होने वाला नुकसान है। उनके देहान्त के साथ न सिपर्फ भारत की कम्युनिस्ट पार्टी पुनर्गठन केन्द्र (माले) को बड़ा नुकसान हुआ है बल्कि समूचे कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन के लिए यह अपूर्णनीय क्षति है।

वे आजीवन भारत के कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन की एकता के लिए चिंतित रहे। उनको सही श्रद्वांजलि यही होगी कि हम सब भारतीय क्रांति के समक्ष दरपेश बुनियादी सवालों को संबोधित करते हुए भारत में एकल कम्युनिस्ट क्रांतिकारी पार्टी के निर्माण के लिए संघर्ष करें।

पुनगर्ठन कमेटी, भारत की कम्युनिस्ट लीग (माले) का. हरभजन सिंह सोही की याद में लाल झण्डे को झुकाती है। हम ये संकल्प लेते हैं कि हम एकल कम्युनिस्ट क्रांतिकारी पार्टी के निर्माण के संघर्ष में और ज्यादा ताकत लगाकर उनकी मृत्यु से हुए दुःख को शक्ति में बदल देंगे।